TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4476

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥

॥ अर्थ॥ जय कहितां जयवंता हुवो तिं० कं० त्रिभुवननां प्राणीनां वांछित पूरवाने कल्पवृक्ष समान जो

जय० कं० जयवंता हो जिन धं० कं० धन्वंतरि वैद्य समान एह्वी जो श्री २२

॥ श्री जिनकुशलगुरुभ्यो नमः॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि जय

जय० कं० जयवंतो तिहु० तीन भुवन मांहि जीवने कल्याणकोश कला एरो भंडारसमान छो एह्वी जो श्री २३

दु० कं० दुरितपापरूप करी तेहने सिंह समान छो एह्वो श्री २४

ति० कं० तीने त्रिभुवनरे लोके आ० कं० नहीं लंघीजे आज्ञा जेहनी इसरे तीन भुवनमें आ वर्ते एह्वी आज्ञा जेहनी एह्वा प्रभो श्री २५

भु० कं० तीन भुवनरा सा० कं० ना

तिहुअणकल्लाणकोस दुरियक्करिकेसरि॥ तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्त

यकर्त्ता एह्वो श्री २६

कु० कं० करो सुख भलां सुखां प्रते जिनश्रुतादिकेवलीतिणमें ईश्वर पार्श्वनाथ थं० कं० थंभणपुर नगरमें थापना निर्देश रह्यो छो एह्वा र करणा भय करीकहे छै॥ १॥

त० कं० तुझ प्रते स० कं० समरता थका जाणी लहे तिहि कं० जाणे कलिकलत्ता श्री २८

यसामिअ कुणसु सुहाइं जिणेस पासथंभणयपुरट्ठिअ॥ १॥ तइं समरंत लहंति झत्ति

व० कं० भला पुत्र अने कलत्र स्त्री

ध० कं० धान्य अने सोना रा सुवर्ण अणघड्यो मोनो हिरण्य घड्यो मोनो तथा रूपो एणे करी ने नरसा पूर्ण पाछा राज तिलक अने रामैक जन लेति केते गये छै पा मेछै॥

पि० कं० देखे मनुष्य जीव छे मोक्ष रा असंख्य अनंत सुख प्रते॥

वरपुत्तकलत्तइं॥ धन्नसुवण्णहिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइं॥ पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख॥

1

उ०क० हे पार्श्वनाथ अम्हारे प्रमादे करिने अम्हारे ध्यान रे वल्लभ इसक कहतां इण हेते तिं०क० त्रिभुवन मंदे वरप्रधान मोटा कल्पवृक्ष समान छो तिणवास्ते हे जिन उ०क० तु ५करी मह कहितां मुझने आरर २ जरकहतां कर नावतिलेकरिने जड्डार कहतां

खुड्डुदंपासपमाइण इयसिअअणवरकप्परुक्खसुरकंउणमइजिण २ करजड्ड

जारापराक्रम छे वली परिजुन्नकन्न कहितां मदाणया छे कान जिणरा नठक कहतां बेठ्या छे सेवजिणरा मुकुठिण कहितां कोढरोग छे तिणे करिने चक्रखीण छे जिणरी तथा क्षयरोगे करिने खुल कहितां हूब लोछे जिणरी एहवा नेर कहितां मनुष्य वली अवियक० मालसमान छे वलि रोग जिणारे इसा जी वहे जिन

रपरिजुन्नकन्नन्नुट्ठमकुठिण चक्खुक्खीणखएणखुन्नन्नरसल्लिअसूलेण तुहजि

उहसरणरसायणेण क०अम्हारो स्मरण तेहिज रसायन छे तिणे करने जड्ड कहितां समाव कांति कहितां काये उगलव कहितां नवपल्लव सुवर्ण वर्णनी रोगसरीरी इणवास्ते जय कहितां जयवंतवर्त्तो धन्वंतर वैद्यसमान हे पार्श्वनाथ उं मह चिकहतां माहरे विलरोग रोहरण हार होयज्यो

णसरणरसायणेणलजडजंतिउणन्नव जयधन्नंतरिपासमहवितुहरोगहरोभव

विज्जा कहतां विद्याया जोइस क० ज्योतिषमंत्र तंत्रश्रा वसिमि अणिमा १ गरिमा २ महिमा ३ लघिमा ४ प्राकाम्य ५ ईशित्व ६ वशित्व ७ वशित्व८ एसर्व जतन विना जेहना विना सिद्धि जवरतडे भुवनमें लोकमें अद्भुत अचरिजकारी इसे नाम कसाथे ते आढ विधे सिद्धि तिके शिक्षई सिद्ध होवे प्र पत लड्डवेछे तिको सर्व उह तमारे नामसुं

३ विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउअपयत्तेण भुवणब्भुअअट्ठविहसिद्धिसिज्झइंतुहना

उहनाम ठिण कहितां अम्हारे नाम सुं करिने जे जीव अम वि नीचक्क जन में कपनो विल लोकमें अतिशयमनमें पवित्र छावे एउ अम्हारे नाम करिने एनाव ते कहतां तिणवास्ते तिहुअण तीनलोकने कल्याण रा कोससंभार समान उह तम्हे

मिण उहनामिणंअपवित्तविजणहोइपवित्तउ तंतिहुअणंकल्लाणकोसंतहपा

पार्श्वनाथ पंडित जनिकसो छइ खुद्द क० उछलित लि पउत्त क० प्रवर्त्त्या मंत्रतंत्र जंत्र तिके सर्व उम्हारे नाम प्रत्ये समरवे करि विकलड्डवेछे चरजंगम थिर थावरग रहु विष गरुगाक० जो रावरन वग्गु खग्गारिं क० खड्ग प्रभुख प्रसमुहित वैरी या रो समूह इण सर्वन वि०क०

संनिरुत्त ४ खुद्दपउत्तइंमंततंतजंताइंविसुत्तइं चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउव

इरकरे जे प्राणी ताह रो नाम जपे तेह ने ए भवैनही उ०क० उरव मे प्रया प्याचरा लोक अमाण०क० कहितां असन भिपस्त कछ मे परवसउवालिणाउ तिहार इक हतो निसार छे दयकरिक० दयाकरने उमे उ०क० उरितपापतिका तुं हे पार्श्वदेव हे देव सर्वलोकना दुरित हरो जिणवास्ते उम्हे

गविगंजइ उत्थिअसहुअणत्थघट्टनित्थारइदयकरि उरियइंहरउसुपासदेवउरि

उरित रूप हाथी ते हणवाने केसरी सिंह समान छो उल्लहारी आलमाइं पवी छे जे जीवन तयकर० अरइं कारिद दिठ जो रायरसुर नतवेतसमुपने धर्मे छे वील ना छे राक्षसयक्ष फणिंद नागेंद तिणरा वृंद समहते वलेवोर अग्नसमान अगनि मुलप

यकरिकेसरि ५ उहआणाथंभेइभीमदप्पुद्धरसुरवर रक्खसजक्खफणिंदविंदचो

2

स्वरूपनें एहवु यंत्र यरावेछे॥ जं० क० जलचारी जीव मगर मछादिक थलचारी सिंहादिक रुद्र क्षीद्र मन उद्र दुष्टि मार्जारी जिके पसु तिर्यंच जीव योगिणी स्त्रीयां योगी मंत्रवादी दुःख देते सर्वथी नाथ रहे इ० क० इण देसे तीन भुवनमें अ(?)लंघ्य आण वंतना तेहदेवा

रौद्रक्षुद्र जलथलचारि रउद्दखुद्दपसु जोइणि जोइअ इयतिहुअणअविलं

सर्वनाथ हे सुख कारी स्वामी जगमें अतिशय करिनें जयवंत वर्त्तो १० क० प्रार्थना करतां इष्ट वयो जनारी एहवा अनर्थ नुं नाशक जिनें वारे नरमनुष्य तरत स्याछे कांतिना तिराचे वाकरि नदनस्या रो० क० रोम रो म में विशेषदर्श नाथ उल्लासनुं

घियाणजयपाससुसामिय ६ पढिअअनवरयआणउदिनहतिअर निअर रोमंचंचिअ

चारु सुंदर मनो हरकाय सरीर छे जिणरो एहवा किंनर देवता मनुष्य सुरवर देवमोटी कं ह्रि राधली सर्व आ परे नावछे जसु० क० जिण पार्श्वदेवराय वेछे चरण कमल जुगल तिको चरण कम लरो युगल जो फोकेछेवोछे प० क० परवालियो धोयानांख्यो छे सर्वपापजिणें एहवोछे॥

चारुकायकिंनरनरसुरवर जसुसेवहिकमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु सो

सो तिको भुवन त्रय तीनलोक रो स्वामी पास० क० पार्श्वप्रभु जी तिको एहवो महमारे रो रिपुवल प्रदेहि दूरकरो कर्मवैरी बांरो दल छे जं० क० जयवंत वर्त्तो जो० क० योगिजनतिकारे हृदय कमलरूप रि नमलन मरे समान छो हे पार्श्वनाथ भ० क० भयनारोपांजरो नांजवाने

भुवणत्तयसामिपासमहमद्दउरिउवलु ७ जयजोइयमणकमलभसलभयपंजर

लवास मानछो ति० क० तीन भुवनरा जो कांने आणंद रूप आवण नुंचंद्रमा समा न छो भु० क० भुवन त्रय तीन लोकरा नव्य जीवरो अज्ञानअंध कार उदूर करवा सूर्य जेहो ६ जं० क० जयवंत वर्त्तो मइ क० सुमति रूप मेदि० क० धरती ति हने सीचवाने वास्ते मेघसमान छो ५ जं० क० जगतराजी

कुंजर तिहुयणजणआणंदचंदभुवणत्तयदिणयर जयमइमेइणिवारिवाहजय

वांने पितामहदादा समान छो रक्षाका रक छो६ थं० क० थंभणो नगरने विषे विराजमान रह्या छो हे पार्श्वप्रभु जी हे पार्श्वनाथ नाथपणो माहरो करो मो नुं सनाथ करो ए वारह ६ ब० क० बहुविधवर्णविध वादिके अवर्ण पाडे चारीये

जंतुपिआमह थंभणयट्ठिअपासनाहनाहत्तणकुणमह ८ बहुविहवन्नुअवन्नु

सन्यथी अवर्ण छो सर्वमत राजे छ० क० पहिला तेले उभरने ना मतरे कोरछे तत्वे इंदी ज मु० क० केई वास्ते मोक्ष धर्म काम अर्थ ए४ पुरुषार्थ रे कांमे अर्थे नरमनुष्य निज निज आप आपरा सास्त्रां मांहे जं० क० जिणने ध्यावे छे बहु० क० घणा द रसन घटदरसनि लिणोरे

सुन्नुवन्निउछप्पन्निहि मुक्खधम्मकामत्थकामनरनिअनिअसत्थिहि जंझायइबहु

विशेर ख्यायका तिणवासते ही ज घणो नामे करने प्रसिद्ध विख्यात छे सो तिको योगीश्वरां रे मनकमल हृदय कमल में भ्रमर भमरे समान छे सो पार्श्वनाथ अम्मनें सुखसमारो सुखवृद्धि करो

दरिसणत्थबहुनामपसिद्धउ सोजोइयमणकमलभसलसुहुपासपवद्धउ ९

भं० कं० भयेकरी विकल आकुल व्याकुल छे रण० झणिर० कं० कड
कडाट करता थका दांत छे जिणारा थरहरी छे सरीर भजियो छे
शरीर जिणरो॥

तरल चपल अथिर छे नयण नेत्र जिणरा
व० कं० विषाद वंत छे सुन्न कं० सून्य छे हृद
य जिणरा गदगद वाणी छे जिणनी

भयविहलरणझणिरदसणथरहरिअसरीरय तरलियनयणविसन्नसुन्नगग्गर

क० कं० करुणा वंत
आक्रंदना वंता

त० कं० तुझ प्रते स० कं० उतावला स० कं० स्मरण करता
थका हुं० कं० हुवे तिके मनुष्य ना० कं० नीठा नयारो नास
करे मोटा भय जाता रहे छे तिणरा॥

इण वास्ते म्हारा पिण दूर करो
भयरूप नयारो प्रते हे श्री पार्श्व

गिरकरुणय तइसहसत्तिसरंतहुंतिनरनासियगुरुदर महविज्झविसज्झसइंपास

नाथ भयां रो पांजरो
नो भजवा ने हाथी स
मान छो

१०

प० कं० तुमने पा० कं० देखिने वि० कं० विकसता
नेत्रां रो अंत तिहां सूं थी प्रवर्त्यो छे विस्तार्यो छे

बा० कं० हुर्यां रा आंसु तिकां रो
प्रवाह तिणे करिने दुःख रोग गयो छे
दूर घणा काल रो दुह दाह रो

भयपंजरकुंजर १० पइंपासिविविअसंतनित्तपत्तंतपवत्तिअ बाहपवाहपवूढरूढदुह

दाह जिणरो रोमांच
हरख्या छे सु० कं० रो
मो रोमंचित थयो छे
गात्र जिणरो

तिके म० कं० मानेछे मानवा योग्य पुण्यवंत पवि
त्र आत्मा ने सुर नर देवता मनुष्य प्रमुख सर्व /

इ० कं० इण वास्ते तीन भुवन में आ
णंद करवा ने चंद्रमा समान छो

दाहसुपुलइअ मन्नहिमन्नुसउन्नुपुन्नुअप्पाणसुरनर इअतिजयआणंदचंदज

हे पार्श्वनाथ जिने
श्वर तुं जयवंत
हुउ

११

तु० कं० थारे प्रकारे पंच कल्याणक छे जमारे क
ल्याणक पांचां रे विषे महोत्सव निमित्ते टंकार
शब्द घंटा रो तिणे करने प्रेरिया थका

व० कं० वेलमान चंचल चोपां
दीर्घ भक्ति वंत सुरवर इंद्र छे तिके

यपासजिणेसर ११ तुहकल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुर

गुं० कं० रोमांचित
हुआ थका हर्षि
त थका

ह० कं० हलफल्या उतावला थका सर्व लोक करे छे भुवन रे
विषे लोक रे विषे महोत्सव उछाह प्रजा नति

इ० कं० इण कारणे तीन भुवन में
जीवां ने आणंद करवा ने चंद्रमा
समान छो

वरगंजुल्लिअ हल्लुप्फलिअपवत्तयंतिभुवणेविमहूसव इअतिजयआणंदचंद

हे पार्श्वनाथ तुं जयवं
तो वर्तो हे सुखरी
खांण छो

१२

नि० कं० निरावरण केवल ज्ञान रूप किरण तिणे समूहे करिने
वि० कं० विध्वंस्या छे तमस्तज्ञान अंधारे रो सर्व प्रकार जिणे

दं० कं० बता
यो छे सर

जयपाससुहुब्भव १२ निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरिअतमपहयर दंसिअस

प्रकाश्यो छे सकल पदार्थ अर्थ सहित तिको
ही जविस्तार वंत प्रकारो तेजरो समूह छे
जिणरे

क० कं० कलिकाले करिने कलुषमलीन अज्ञानी जे लोक तिके ही
जघूघलो कतिणांरे नेत्र नावे छे आंति हुणीयां रे लोचन गम्य
गोचर छे

यलपयत्थसत्थवित्थरिअपहाभर कलिकलुसिअजणघूयलोअलोअणहअगोयर

तिलवासो ति० क० तिमिरसूपअज्ञानतिणंनु हे पार्श्वनाथ निकरहरइरकरफेदनाव जेहुंते अंतीनभुवनमेदिनकर सूर्यसमान १२ उ० क० उमारेभरणकूपजे लपांलीतेह नीवर्षासुभीवालीमनुष्यांरी

तिमिरइ निसइरपासनाह भुवणत्तयदिणयर ॥१३॥ उदसमरणजलवरिससलिलमाण

मतिसूपमिदनी धरतीआणवी अ० क० अवनवाजेसूपमअरथनीवादिनवनवरोंसोन बोधतिकेहीजकंदलनवाअंकुरा छैदजवांनतिलेकर सोहैछै जा० क० ऊपजेतिलरो फ० क० फल विरलप्रमुखरोमनुहुतिलेकरिने न रिय० क० नमोछे ए० क० हरकीमे

वमइमेइणि अवरावरसुहमुत्तबोहकंदलदलरेहिणि जायइफलभरनरियहरि

छेउपारोदाह दहवीअपमा रहितअनुपम इ० क० इणहेतेमतिसुमतिदष्टीनेनवपल्लवकरवाने मेहुअमाननवी हेपार्श्वनाथममुनेमति सुमतिदियदे हदीजे १४ क० क० कीधोछेमय अकल्याणरीवेल

यदुइहदाहअणोवम इयमइमेइणिवारिवाह दिसपासमइंमम ॥१४॥ कयअविकल

जिणें उ० क० उछेदनांषोछे उपरो वनछेतेजिलें दहबोवछे दा० क० दीधोछेश का आपोछे स्वर्गमोक्षरोमार्गजिलेहु० क० उरगतमेंजावणोतिकेरोवरजणहार ज० क० इण वास्तेजगत

कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणु दाविअसग्गपवग्गमग्गदुग्गइगमवारण जयजंतुह

रलोकतिणांरेपितारेअपकारीबोउनमे पिताजिमकल्याणकरे तिमउंदितकारी छ इ० क० इसडीकधर्मछेजेकोसोजय यंतरहोश्रीपार्श्वनाथ प्रभुजीजगजीवांरे पिता धर्मछे तिकेरोजनकजागवानदा हे समानछइ १५

जणएण उसुजंजणिउहियावज्ज रसुधम्मसोजयउपासजयजंतुपिअामह ॥१५॥

इमछप्पहारकछिनइ हिवेइसडीवीनतीकरेछे सु० क० सुव नधरहपअरणपरोहीतवे णावाची दहवाप्रहकारी १२८२ मणरादेवतावोदश्रादिकतिके जो० क० जोगिलीयांदुष्टमंत्रवाज्यांष्टतनायंत रीयांक्षेत्रपालजक्षुइइडुष्टजवनपतीदेवतेहिज

भुवणारन्नविवासदरिअपरदरिसणदेवय जोइणिपूअणखित्तवालखुद्दासुरप

पसूयां रोमपद ह उ० क० तिकोउपरेअपामेमागवागताति नोंकरिनेंअविसंस्थूलपणइहवण्माग्मेंरहेछे इ० क० इणहेतेंतीनभुवनसूपवनतेहमें सीदमानछमें हे पार्श्वनाथम्हारा

सुवया उदउत्तणुनत्तमुडुअविसंतुलचिदृहि इअतिजगवणसोहपासपा

पापतुंनसावीश्यकरो १६ फ० क० फणीधरलेंद्रतिणरा फणांरे विषेविस्तीर्णदेदीप्यमान दीपतांजेरत्नतिणांरेकिरणेंकरीसोभितकीधोनभस्तलआकाश फलनीजे श्रुंगीरीवेलि

वाइंपणासहि ॥१६॥ फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल फलिणीकं

तेहना कंदजन वाम्ह रादलपांन तथा त कं० कं० कमठ नामें असुर राकी धा जे उपसर्ग अनेक प्रकार
मालरह ताराफान नीलोत्पल नी लो कमल ते रात्रिदिन वर्षा मह तिण रे मनमें विण गंजाण न हीतिण आगं
समान श्याम वर्ण काले वर्णे ज वे तेह वा जितवो

दलदलत मालनी लुत्पल सामल कमठासुरडव सग्ग वग्ग संसग्ग अगंजिअ

जयवंत वर्तो प्रत्यक्ष पणे हे जिनेश्वर हे पार्श्व प्रभु जी थे तणें म० कं० मा हरो मन किसो छे तरल चपल
नगरराज विषेरह्या छो इहां प्रत्यक्ष सबदें करिने पार्श्वनाथ छे तिणें प्रविण प्रमाण नहीं छे वाचाजी
प्रगट जग्या जाणवा १७ ते पिण विसंस्थुल

जयपच्चरक जिणेसपास थंभण यउर ठिआ १७ मह मणु तरल पमाणु नेअ वाय २

वी कन छे आ न० कं० नहीं छे वले काया पिण जेअ वनयरे स्वभावे छे आलसु तथा छु० कं० इतरे कांइ
धीपाडी छे सुंआ जसें करिने परवस छे तिणें माहि रे गुणे उमें प्रयत्न उमारो मह तल सह
नहीं जवो नावछे

विविसंथुलु नय तणुर विअविणय सहावु आलस विहलंघलु तइ माहप्पप

ते हिज प्रमाण छे हे देव उमारे इ० कं० इण हेतें मोनुं अविण लो मामहि रवा नी आण करवे
करुणा नावसुं पवित्र पदमो कुं लुं हे पार्श्व प्रभुजी मोनुं पाजो रागादिक वैरी यांसुं राखो १८
सुं तिके विज विजेउ वविजा प करतेज इ

माण देव कारुण पवित्त इअ मइं मा अवहीरि पास पालहि विलवंतउ १८

किं० कं० कांइ कांइ चिंत व्यो न हीं दयामणो कांइ किं० कं० कांइर चेष्टानकी धी कांइ हेकरी हे देव पार्श्व
कांइ बोल्यो नहीं दतावता सर्व की धा तिमवली नाथ जी दीनपणो करिने एह वेंकि प्रकार की धा

किंकिं कप्पिउने अकलुणु किं किं वन जंपिउ किं वन चिट्ठिउ किटुदेव दीणयमवलंबिउ १

का० कं० कांइ रन की धो निफल लाज पालक रिने त० कं० तो पिण कोई राषण हार पाम्यो नहीं एकलुं गाड
आडे उरवे करिने स्वर्ग आगें एह प्रकार उपमुं की आ र प्रभुजो जिनें ते विना राषण हार बीजो कोई नहीं

कासुन की अनिप्फल ललिअ मुहे हिं दुहतिहि तह विन पत्तउ ताण किं पि पइ पहु परिच

उं० कं० उंकार माता उं पिता उं मित्र बीत कारी हित कारी उंग सिद्ध सतिहं दिज एक राषण
१९

तिहि १९ उंकं सामिउ उंज माय व पुउं जमित्र पिअंकरु उंज गइ उं जं मह उंज जिता

हार उं गुरु षेम कराज उं जु वरे मम्हंम्हंन्हारी उं नापडो रांक निरधार हिवें तो कुं जीनु उम्हा
षेमक ल्पाण कारक हित तिलं रोगाकर निरधार रे चरण कमल रे

गुरु उंगुरु षेमंकरु उं उ दुहभर भारि उवराउ राउ लनि भग्गह लीणउ तुह कमकम
6

विशेषे हि जय्यर णो ब्ह माहरे श्रण
देखो हे जिनपार्श्वनाथ २० पुंनें पालीजलें अकारें मुकनें राषियै॥ प० क० तें केताइक लोकानुं
नीरोग कीधा केताइक नें मई कडां सुबदीधा॥

तमरणु जिणपासह हिवंगह २० पइ किविकय नीरोअ लोअ कि विपाविअसुहसय

केईकनुं अवंतकीधा केईक मोटा महंतकीधा केईकनुं मोष
सधाया केई एकां रागं जाया जीता या वेरीयांरा मय
ह केई एक जस धारी करि

कि विमइ पंत महंत केवि कि विसाहिअसिवपय कि विगंजिय रिउ वग्ग केवि जस

धवलीजगजणे प० क० तो मोनें कि मे वास्तें अवगिणे छे हे पार्श्वनाथ प० क० प्रति उपकार कि
कीधो छे पत्नुंतो अपरलें आयांनें हित रोकरण हारछे २१ यापछी कांई चाहे

धवलिय भूअल मइ अवहीरहि केण पाससरणागय वच्छल २१ पत्नुवयार निरीह

नहीहे नाथ थारे सर्व प्रयो व० क० हे पार्श्व देव उपर उपगार करवानें करुणा वंत छे म० क० हता वेरीनें
जननीपना बह॥ सावधान तत्पर छे एहवो कोई नहीं मित्र विरुऊपरि

नाह निप्पन्नपयोयण तुह जिण पास परोवयार करणिक परायण सत्तुमित्तसमचि

× मरीयो जावछे × समचित्त छे सम भाव छे चित्तरो मा० क० न तअवहीलअ व जिण अयोग्य हुं तो पि २२ ऊं० क० ऊंधतो
आपार जे वंदे निंदे ते ऊपरि॥ णहे पार्श्वनाथ कम रहित हे निरंजन मो तु प्रकारें ऊ बस्तु

त्तवित्ति नय निंदयसममण मा अवहीरि अजुग्गउ विमइ पास निरंजण २२ जंबऊं निदं

तालोकु शरीरें ऊ दूषनामकरवानें ऊं० क० ऊं भ्रजनमांहि दयारो एक स्थानकु ऊं अतिशय ऊं देजि
ऊ बगमा वणनें तत्पर छे सावधान करी दयारो करणहार न
३६

हतक्षगह उऊं ऊहनाम णपरु ऊं सुयण करु णिक्कभाणउ ऊंनिरु वारुणाकर ऊं जि

हे पार्श्वनाथ नायकुं रहित छु तुं त्रिभुवनरो स्वामी छे मं० क० इणवास्तें जे मुफनें अवगिणे छे विलाप क
रता थकां हे पार्श्वनाथ इमंन लोभछे तलोइणभाति २३
दीसे छे

णपास असामि साहु तुति जगण सामि अ जं अवहीरहि मइ झखंतइ उ पास न सोहिअ २३

जु० क० योग्य अयोग्य रो विचार हे नाथ न जोइजे जु० क० लोकांरे विषे उपगार करवारो स्वभाव ति स० क०
थां आ री बात णें करि दया करि विख्यात प्रसिद्ध छे जियांरे

जुग्गाजुग्गविभागु नाह न हु जोइय तउ हसम भुवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम सम

7

समचित्तमीयोमें कांइ भेदनथरमइ थरतीरोदाह पिटावलोइतरें वरमेंहीज
इं० कं० इणकारणें उषीयांरो हितकारी छे हे पार्श्वनाथ उन्हतुं फलतो स्तवुतो जिकं तेहनें पाजो उपसु नचावो

विसमइ किंघणुनिएहिंउ विदाहसमंतउ इञ्जउ हिंअधवपासनाहमइंपालिञ्जुंतो

न० का० नहीदीनजनारीदीनताने भेदने बीजी काइ योग्यतादेषली
जे० कं० जिणनें जो मनइ उपगार करें बइउपगाररा उद्यमवंत

२४ नयदीणहदीणयमुएविञ्जनविकि विञुणाइ जंजोइविउवयारुकरिहिंउवयार

महापुरुष अइ लिकरं
दी० कं० जंदीनमुंदीवनोदीनमुं मनमुं रहितमुं जिले रेतेते नाथें स्वामीयें ओष्योनही
त० कं० तिण हेलें योग्यपिण जंदीजतुं दीनपणाथकी इणवासें हे पार्श्वजिन

समुज्जाय दीणहदीणुनिहीणुजेणतइंनाहिणचत्तउ तउजुगाउञ्जहमेवपासपालि

मुने पाल राषी जेनलीतरे
२५
अ० कं० अथवा बीजो पिणयोग्यताविशेष कांइ एक मानें छे लं दीनदयामणासुं
जं० कं० जिण मेलि देषने उपगार करे छे

हमइंवंगउ २५ ञ्जह ञ्जनुविञुणायविसेसुकिविमन्नहिंदीणह जंपासविउवयारक

उ स्वामी सर्वनइ उपगार करइ छइ
सु० कं० तिको जीवनें निश्चे सुषकल्याण हे जिन हे पार्श्वनाथ भगवान तुझ्हे प्रसन्न सहिरवान जायो
कि० कं० कांई बीजे मुंडीजहें श्री पार्श्व

रहिंउहनाहसमगाह सुञ्चियकिलकल्लाणुजेणजिणतुम्हेंपसीयह किंञ्जनिलणसंचेव

देवस्वामी मनछुफने अव गुणअपमान
२६
उ० कं० तम्हारी प्रार्थना कदे ही पिण जावे नहीं निकल हे जिन जाणुं मुं कि मुं पिण केरवली
ज० कं० जउपि योमुं निश्चेमुं

देवमाहमेंञ्जवहीरह २६ उहपञ्जणनजोइविहलुजिणजाणुकिंवुणं जेउरिकञ्ज

सत्वमुं रमतां उजम दोहिलो उत्सुकमन मुंफलरोजोनी
तं० कं० तिले कारणे जाणुं मुं आपरे करकारे जोए ज्ञान दर्शन चारित्र केवलज्ञान मोक्षजो जाणे
म० कं० सा चीकातजि को

निरुसञ्जवञ्जुउककुउस्सुयमणु तंमञ्जउनिमिसेणएणएउविञ्जाइजञ्जे सञ्चंज।

स्वरइ वसइ कांई उ० वरपाके अकाजे वरुमुंफलमागोंमोन पामे
२७
ति० कं० हे त्रिभुवनरा स्वामी हे पार्श्वनाथ में आपो प्रकाश्यो

उरिकयवसेणकिंउवरुपञ्चे २७ तिञ्जञ्जणसामिञ्जपासनाहमइंञ्जप्पुपयासिउ।

करोमेतुं जिकोजिओ तुम्हारो स्वरूप छे तिओ ऊं नजाणुं घणी जातिबो जलो — अ० क० बीजो कोइ नही हे जिन जगमें उपमा न वले दाक्षिण्य वाउरी अमें

किं आउं जलियसव्वसरिसं नमणं वक्कं जं पिउ अलुन्न जिण जगि तुह समो वि दक्खिण्ण

दयारो नि धान — ज० क० जो तुं ही जअवगिली मुनें नजांगली सतो हाहा महा खेदे ऊं किण नातिहोइ अतो माहरा मनोरथ निकज — ज० क० जो ताहरें रूपें किण ही — २८

दयासउ जइ अवगिलसि तुं हि जिअ अहह कह हो सुदयासउ २८ ता इ उदरूविणि

शेतव्यंतर देवता वायें जो जायो छे [illegible] उ० क० तो पिण ऊं जाणुं छु हे जिन पार्श्वनाथ उम्हने ही ज जल्पो छे इम अंगीकार कीधो छे — इ० क० ओ माहरो

किणविपेयपाइण वेजविउ उवि जाणउं जिणपास उम्हिं अंगीकरियो इअमह

इच्छित वास्ते जो न जावे ति का उम्हारी हीजणा ऊंओ नाछे — जे राखणहार छो आपरी कीर्ति तो ओग्प न छे तुझने अवगिणो छो नो — २९

इच्छिअं जन्न होइ सा उह तेलावण रक्खंतह नियकित्तिं गेयजुज्जइ अवहीरण २९ ॥ ८

१० क० आमाहरी या वाछे हे देव ओ म्हा नमहो इव छे ॥ — जै० क० जे म्हारा ताहरा गुणग्रहणगुणं रो स्तवन कीधो उम्हारो मुनिजनने

अमहारीयजत्तदेव इअन्हवणमहूसव जं अणलियगुणगहणु उम्ह मुणिजण अ

अनिषिद्ध छे बीजानुं न छे — १० क० इण जाति प्रसन्न हो वदे पार्श्वनाथ थंभणे नगर रे विषइं बिराजमान ॥ — इ० क० इण रीतें मुनिवर श्री अभय देवसूरि नवांगी वृत्तिकारक ते

णिसिद्धउ एवं पसीय सुपासनाह थंभणयपुरट्ठिय इयमुणिवरु सिरिअभयदेउ

वीनवइ छइ अनिंदित थको जो कर्मे वषाणवा योग्य — ३०

विन्नवइ अणिंदिय ३० इतिश्रीस्तंभनिकपार्श्वनाथस्तोत्र ॥ सं१८८९रा मि॥म

गसरसुदि १० लिखितं ॥ पं ज्ञानलाभमुनिना ॥ श्रीउदेपुर धर्मशालामध्ये ॥ श्री ॥

जैनन्यायग्रंथ
तत्वार्थ:
सम्मति
स्याद्वादरत्नाकर:
प्रमाणमंजरी
प्रमाणमीमांसा
अनेकांतजयपताका:
दिगंबरग्रंथ
प्रमेयकमलमार्तंड
न्यायकुमुदचंद्र
आप्तपरीक्षा
अष्टसहस्री
सिद्धांतसार